शहीदे आज़म की जेल नोट बुक

एक युवा क्रान्तिकारी की वसीयत उनके लिए जो सही अर्थों में युवा हैं

• अरविन्द सिंह

भारतीय इतिहास के इस दुर्लभ दस्तावेज का महत्व सिर्फ इसकी ऐतिहासिकता में ही नहीं है। भगत सिंह के अधूरे सपने को पूरा करने वाली भारतीय क्रान्ति आज एक ऐसे पड़ाव पर है जहां से नये प्रचण्ड वेग से आगे बढ़ने के लिए इसके सिपाहियों को 'इंक़लाब की तलवार को विचारों की सान पर' नई धार देनी है। यह नोट बुक उन सबके लिए विचारों की रोशनी से दमकता एक प्रेरणापुंज है जो इस विरासत को आगे बढ़ाने का जज़्बा रखते हैं।

- भगत सिंह की जेल नोट बुक के सम्पादक की टिप्पणी

"तारे नहीं देश नहीं, काल नहीं/ठहराव नहीं, बदलाव नहीं, नेकी नहीं, बदी नहीं/बल्कि खामोशी और एक निस्पन्द सांस/जो न जीवन की, न मृत्यु की। (नोट बुक में उद्धृत अंग्रेज कवि वायरन की कविता की पंक्तियां) *"हमें जीना है पूरी तरह अपने हमसफर भाइयों के लिए/हमें देना होगा अपना सर्वस्व उनके लिए/और उन्हीं की खातिर लड़ना होगा बदनसीबी के खिलाफ !* (नोट बुक में उद्धृत रूसी क्रान्तिकारी, लेखक, कवि और वैज्ञानिक मोरोज़ोव की काव्यपंक्तियां)।

शहीदे आज़म भगत सिंह की जेल नोट बुक के पन्नों से गुजरते हुए इन्सानियत की बदनसीबी के खिलाफ अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने को तत्पर एक बेहद संवेदनशील, काव्यात्मक बोध से परिपूर्ण, धीरोदात्त, ओजस्वी क्रान्तिकारी युवक का चेहरा तो सामने आता ही है लेकिन हमारी आंखों के सामने बार-बार एक ऐसे नौजवान की छवि भी उभरती है जो "फांसी के फन्दे के साये में बैठकर भारतीय इंक़लाब के रास्ते की सही समझ हासिल करने और उसे लोगों तक पहुंचाने के लिए आखिरी पल तक अध्ययन-मनन और लेखन में जुटा रहा।" (नोट बुक के सम्पादक की टिप्पणी)

लेकिन, इतिहास की यह एक दुखद विडम्बना है कि आज भी इस देश के शिक्षित लोगों का एक बड़ा हिस्सा भगत सिंह को एक महान वीर तो मानता है, पर यह नहीं जानता कि 23 वर्ष का यह युवक एक महान चिन्तक भी था। राजनीतिक आजादी मिलने के पचास वर्षों बाद भी सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, नेहरू वाङ्मय से लेकर सभी राष्ट्रपतियों के आनुष्ठानिक भाषणों के विशद्ग्रन्थ तक प्रकाशित होते रहे पर किसी भी सरकार ने भगत सिंह और उनके साथियों के सभी दस्तावेजों को अभिलेखागार, पत्र-पत्रिकाओं और व्यक्तिगत संग्रहों से निकालकर छापने की सुधि नहीं ली।" (नोट बुक के हिन्दी संस्करण में शामिल आलोक रंजन की टिप्पणी)

छिटपुट पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों, भगत सिंह के समकालीन क्रान्तिकारियों की पुस्तकों-लेखों और विपिन चन्द्र, जी. देवल जैसे कुछेक इतिहासकारों-लेखकों के विभिन्न लेखों-पुस्तकों से भगत सिंह के विचारक व्यक्तित्व पर रोशनी अवश्य पड़ती रही है, पर बहुसंख्यक शिक्षित आबादी भी इससे बहुत कम ही परिचित रही है। अलबत्ता, देश के कई क्रान्तिकारी वामपन्थी ग्रुपों ने भगत सिंह के ऐतिहासिक बयानों-दस्तावेजों को छोटी पुस्तिकाओं के रूप में छापकर अपनी सामर्थ्यभर प्रचारित-प्रसारित करने की कोशिश की।

सबसे पहले **जगमोहन सिंह** (भगत सिंह की बहन के पुत्र) व **चमन लाल** ने उनके अधिकांश वक्तव्यों, लेखों, पत्रों और दस्तावेजों को एक जगह संकलित किया (लेकिन यह भी सम्पूर्ण नहीं है) जो 1986 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। भगत सिंह के सर्वोन्नत विचार इस संकलन में शामिल। **'क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा'** नामक दस्तावेज में देखने को मिलते हैं, जिस पर 2 फरवरी 1931 की तिथि अंकित है। उनकी पूरी विचार-यात्रा को 1929 से मार्च 1931 तक के इस संकलन में प्रकाशित दस्तावेजों, लेखों-पत्रों और वक्तव्यों में देखा जा सकता है।

लेकिन, भगत सिंह की जेल नोट बुक मिलने के बाद भगत सिंह के चिन्तक व्यक्तित्व की व्यापकता और गहराई पर और अधिक स्पष्ट रोशनी पड़ी है, उनकी विकास की प्रक्रिया समझने में मदद मिली है और यह सच्चाई और अधिक पुष्ट हुई है कि भगत सिंह ने अपने अन्तिम दिनों में, सुव्यवस्थित एवं गहन अध्ययन के बाद बुद्धिसंगत ढंग से मार्क्सवाद को अपना मार्गदर्शक सिद्धान्त बनाया था।

भगत सिंह की इस महान विचार-यात्रा से हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों को परिचित कराने का यह बेहद जरूरी कार्य **परिकल्पना प्रकाशन, लखनऊ** ने मूल अंग्रेजी व कहीं-कहीं उर्दू में लिखे गये नोट्स का हिन्दी अनुवाद इस वर्ष प्रकाशित कर किया है। हिन्दी अनुवाद **'दायित्वबोध'** पत्रिका के सम्पादक विश्वनाथ मिश्र ने किया है। पत्रकार सत्यम वर्मा द्वारा सम्पादित नोट बुक के हिन्दी संस्करण में रूसी विद्वान एल० वी० मित्रोखिन और आलोक रंजन की दो परिचयात्मक टिप्पणियां भी संकलित हैं, जो इस सच्चाई से हमारा परिचय कराती हैं कि किन दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में भगत सिंह की जेल नोट बुक उनकी शहादत के तिरसठ वर्षों बाद ही छपकर आ सकी। जयपुर से **'इण्डियन बुक क्रॉनिकल'** द्वारा भूपेन्द्र हूजा के सम्पादन में **' A Martyr's Notebook'** नाम से अंग्रेजी में 1993 में पहली बार यह छपी थी। हिन्दी अनुवाद में इस पुस्तक की विशेष मदद ली गयी है।

1977 में एल०वी० मित्रोखिन ने भगत सिंह की जेल नोट बुक पहली बार फरीदाबाद में रह रहे भगत सिंह के भाई **कुलबीर सिंह** के पास देखी थी और उसका विस्तृत अध्ययन करके एक लेख लिखा था, जो 1981 में अंग्रेजी में प्रकाशित उनकी पुस्तक **'Lenin & India'** में एक अध्याय के रूप में शामिल किया गया। बाद में, [illegible] में इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी **'लेनिन और भारत'** नाम से प्रगति प्रकाशन, मास्को ने प्रकाशित

किया।

इस पुस्तक में संकलित मित्रोखिन ने अपने लेख में (जिसे वर्तमान हिन्दी संस्करण में भी शामिल किया गया है) लिखा है कि **"ये दस्तावेज युवा क्रान्तिकारी के समृद्ध आत्मिक जीवन पर, आत्म शिक्षा के लिए उनके घोर परिश्रम तथा जेल में कैद के दौरान उनकी विचाराधारात्मक खोज पर प्रकाश डालते हैं। इन कागजों को सरसरी तौर पर देखने पर भी यह पता चलता है कि इनका लेखक प्रखर बुद्धि का धनी व्यक्ति था, जो सोचने के आदतन ढंग को त्यागने में सफल रहा और जिसने प्रगतिशील पश्चिमी चिन्तकों के विचारों को आत्मसात किया। इन नोटों में मार्क्सवाद में भगत सिंह की रुचि ही शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।"**

इसके पहले कि भगत सिंह की "विचारधारात्मक खोज" पर चर्चा की जाये, संक्षेप में भगत सिंह के संवेदना संसार की व्यापकता और गहराई के बारे में, एक सच्चे नौजवान के उन गुणों के बारे में चर्चा की जाये जिनके बिना कोई व्यक्ति इस "खोज" की ओर उन्मुख ही नहीं हो सकता।

'जलियांवाला बाग' के नरसंहार ने तेरह वर्षीय जिस बालक की संवेदना के कोमल तन्तुओं को झनझनाकर रख दिया था और जिसने इस नरमेध के जिम्मेदार आतताइयों के शासन को उसी उम्र में धूल में मिला देने का संकल्प लिया था उसी बालक का संवेदना-जगत इतना विस्तारित हो सकता है कि वह मानव-संवेदना के क्लासिक चितेरों **चार्ल्स डिकंस, अप्टन सिंक्लेयर, ऑस्कर वाइल्ड, बायरन, टेनीसन, इब्सन, वर्ड्सवर्थ, विक्टर ह्यूगो, वेरा फिग्नर, मोरोज़ोव, दोस्तोव्स्की और गोर्की** आदि कवियों-लेखकों की रचनाओं के सार को आत्मसात कर सके।

नोट बुक में इन सभी महान रचनाकारों की रचनाओं से जो नोट्स लिये गये हैं वे उस नौजवान की आत्मिक बनावट की झलक हैं जिसकी तड़प यह है कि वह कैसे मानवता की पीड़ाओं के साथ निज को एकरूप करे। एक सच्चे इन्सान की जिन्दगी क्या हो ? उनकी यही तड़प उन्हें संसार की कुरूपताओं से तेजाबी नफ़रत करना और जो भी सुन्दर है उससे हृदय की अतल गहराइयों से प्यार करना सिखा देती है।

"जब तक निम्न वर्ग है, मैं उसमें हूं। जब तक कोई अपराधी तत्व है, मैं उसमें हूं। जब तक कोई जेल में है मैं स्वतंत्र नहीं हूं।" अमेरिकी समाजवादी **यूजीन वी. डेब्स** का यह कथन जब भगत सिंह नोट बुक में दर्ज करते हैं तो वे जीने का अर्थ और लक्ष्य ढूंढ चुके होते हैं -- **"जीवन का अर्थ उम्र की लम्बाई में कम, जीने के बेहतर ढंग में अधिक है।** (फ्रांसीसी दार्शनिक रूसो (1712-1728) के उपन्यास 'एमिली' से)। और उन्होंने इसी ढंग से जिया। उन्होंने जीवन का एक महान लक्ष्य तय किया-मानवता की पीड़ा से मुक्ति, भूख, गरीबी, बेकारी, बीमारी, क्षुद्रताओं, युद्धों, अपमानों से मुक्त एक सुन्दर दुनिया बनाने का लक्ष्य-और इसी के लिए जिये और मरे। *"बेकार की नफरत के लिए नहीं/न सम्मान के लिए, न ही अपनी शाबासी के लिए/बल्कि लक्ष्य की महिमा के लिए/किया जो तुमने, भुलाया नहीं जायेगा।"*

जो नौजवान, इन गहन मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत होगा, वही बेकल, बेचैन और उद्विग्न होकर उस रास्ते की ओर उन्मुख होगा जो हर तरह की दासता से मुक्त एक नयी दुनिया की ओर ले जायेगा। भगत सिंह ने यह रास्ता खोजा-पीड़ित जनसमुदाय द्वारा क्रान्ति के द्वारा पूंजीवाद-साम्राज्यवाद का विध्वंस और एक शोषणविहीन-वर्गविहीन समाज के निर्माण का रास्ता।

अब भगत सिंह की इस "विचारधारात्मक खोज" पर थोड़ा विस्तार से।

भगत सिंह अपनी विचारधारात्मक खोज के आरम्भिक पड़ावों पर स्वतंत्रता और मानव के जन्मसिद्ध अधिकारों की घोषणाएं करने वाले अठारहवीं सदी की अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रान्तियों के महान दार्शनिकों-विचारकों **रूसो, थामस पेन, थामस जैफर्सन, पैट्रिक हेनरी** आदि से मिलते हुए और उनके विचारों को सारगर्भित शीर्षकों के साथ नोट करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। अपनी विचार-यात्रा के अगले स्वाभाविक मुकामों पर फ्रांसीसी काल्पनिक समाजवादियों सेंट साइमन, राबर्ट ओवेन और फूरिये के विचारों से परिचित होते हुए सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के दर्शन और वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तकों मार्क्स-एंगेल्स के विचारों तक पहुंचते है। काल्पनिक समाजवाद से वैज्ञानिक समाजवाद की विकास यात्रा को आत्मसात कर भगत सिंह ने क्रान्तिकारी लाला रामशरण दास की पुस्तक 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका लिखते हुए इन शब्दों में व्यक्त किया था : **"सेंट साइमन, फूरिये और राबर्ट ओवेन और उनके सिद्धान्तों के बिना मार्क्स का वैज्ञानिक समाजवाद निरूपित नहीं हो सकता था।"**

मानव समाज के ऐतिहासिक विकास की एक मंजिल विशेष में व्यक्तिगत सम्पत्ति, परिवार एवं राज्य सत्ता की उत्पत्ति किस प्रकार हुई ? वर्गों की उत्पत्ति के बाद समाज का विकास वर्ग संघर्षों द्वारा किस प्रकार संचालित होता है ? और समाज में जारी इस सतत संघर्ष की परिणतियां क्या-क्या होंगी आदि अनेक बुनियादी प्रश्नों के उत्तर उन्हें मार्क्स, एंगेल्स की कुछ प्रमुख रचनाओं से मिले जो उन्हें उपलब्ध हो सके थे। इनमें एंगेल्स की **'परिवार, व्यक्तिगत सम्पत्ति और राज्य की उत्पत्ति', 'जर्मनी में क्रान्ति एवं प्रतिक्रान्ति'** मार्क्स की रचना **'फ्रांस में गृहयुद्ध'**, हेगेल के **न्याय-दर्शन की समालोचना का प्रयास', मार्क्स-एंगेल्स की 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'** प्रमुख हैं, जिनके अध्ययन से उन्हें न केवल समाज के विकास के आम नियमों को समझने में मदद मिली, वरन् विशेष रूप से पूंजीवादी विकास के बुनियादी नियमों को भी समझने में मदद मिली। धर्म की उत्पत्ति के कारणों और उसकी सामाजिक भूमिका को समझने की उनकी विशेष उत्कण्ठा मार्क्स के अध्ययन से ही जाकर शान्त हो पाती है। धर्म के प्रति एक वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण का विकास भगत सिंह के चिन्तन में एक गुणात्मक विकास को प्रदर्शित करता है।

पूंजीवादी विकास की अमानवीय प्रकृति और सम्पूर्णतः पूंजीवादी समाज की आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक और विचारधारात्मक संरचना को गहराई से समझने और आत्मसात करने की चेष्टाएं नोट बुक के विभिन्न पृष्ठों पर दर्ज है। नोट बुक में दर्ज लेनिन और कुछ अन्य प्रमुख कम्युनिस्ट नेताओं के उद्धरणों से यह ज्ञात होता है कि पूंजीवादी जनतंत्र के सारतत्व को उन्होंने आत्मसात किया था। **लेनिन** की रचना **'सर्वहारा क्रान्ति और गद्दार काउत्सकी'** पढ़ने के बाद सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की ऐतिहासिक अपरिहार्यता को भी उन्होंने आत्मसात कर लिया था। 'शुद्ध लोकतंत्र" की चीख पुकार और समाजवाद के अन्तर्गत "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता" पर पाबन्दी होने के बुर्जुआ कुत्सा-प्रचारों का मर्म समझते हुए उन्होंने नोटबुक में लेनिन का यह उद्धरण दर्ज किया - *"...चूंकि श्रमिक तथा शोषक वर्गों ने साम्राज्यवादी युद्ध के कारण विदेशों के अपने भाइयों से कटे रहकर भी इतिहास में पहली बार स्वयं अपनी सोवियतों की स्थापना कर ली है, उन जनसमूहों को राजनीतिक निर्माण के काम में जुटा दिया है, जिनका बुर्जुआ वर्ग उत्पीड़न करता था, जिन्हें वह कुचलता था और जिन्हें वह मतिमूढ़*

बनाता था... - इसलिए सारे लुच्चे बुर्जुआ जन, खून चूसने वालों का पूरा गिरोह 'मनमानेपन' का शोर मचाने लगा है...।"

स्पष्ट है कि भगत सिंह पूंजीवादी जनतंत्र की असलियत पर पड़े तमाम विभ्रमकारी आवरणों को अपनी तीक्ष्ण खोजी दृष्टि से भेदकर यह समझ चुके थे कि वर्ग-निरपेक्ष जनतंत्र एक ढकोसला है। समाज में जब तक वर्ग कायम हैं तब तक हर राज्य सत्ता एक वर्गीय राज्यसत्ता ही हो सकती है और राज्यसत्ता पर काबिज हर शासक वर्ग विरोधी वर्गों पर अपना वर्गीय अधिनायकत्व कायम करता है।

"राज्य और क्रान्ति" के इन बुनियादी सवालों पर भगत सिंह किसी भी किस्म के संशोधनवादी (या सुधारवादी) विभ्रम के शिकार नहीं थे, यह बात उनके द्वारा जेल नोट बुक में दर्ज किये गये एंगेल्स व लेनिन के अन्य कई उद्धरणों से भी स्पष्ट होती है। उन्होंने यह आत्मसात किया था कि सर्वहारा वर्ग का क्रान्तिकारी अधिनायकत्व सिर्फ एक अस्थायी चीज है जो सिर्फ तभी तक मौजूद रहेगी जब तक समाज में वर्ग मौजूद रहेंगे। वर्गों के खात्मे के साथ ही इसका भी विलोपन हो जायेगा। इस सम्बन्ध में नोट बुक में दर्ज एंगेल्स का यह प्रसिद्ध उद्धरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है :

"...राज्य सिर्फ एक अस्थायी संस्था भर है..... जब तक सर्वहारा वर्ग को राज्य की आवश्यकता रहती है, तब तक इसकी आवश्यकता स्वतंत्रता के हित में नहीं, बल्कि अपने विरोधियों का दमन करने के लिए पड़ती है और जैसे ही स्वतंत्रता की बात करना सम्भव हो जाता है वैसे ही इसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।"

हर सच्चा क्रान्तिकारी स्वप्नदर्शी होता है। या, यों भी कह सकते हैं कि जो स्वप्नदर्शी नहीं है वह शब्द के सही अर्थों में क्रान्तिकारी हो ही नहीं सकता। और जो स्वप्नदर्शी होगा वह विध्वंस के बारे में सोचते हुए निर्माण के बारे में भी निश्चय ही सोचेगा। या, यों कहें कि वह पुराने के विध्वंस के बारे में सोचता ही इसलिए है कि उसे नये का निर्माण करना है। भगत सिंह स्वप्नदर्शी थे, सच्चे क्रान्तिकारी थे। इसीलिए, वे जनवाद के नाम पर मेहनतकश जनता पर थोपी हुई तानाशाही के विध्वसं के बाद एक नये समाजवादी समाज का निर्माण करने का स्वप्न देखते हैं। इस पूंजीवादी तानाशाही के विध्वंस के निष्कर्ष पर पहुंचने में उन्हें कम्युनिस्ट सिद्धान्तकारों-क्रान्तिकारियों की सैद्धान्तिक रचनाओं से ही नहीं वरन् मार्क ट्वेन से लेकर गोर्की तक की रचनाओं से भी मदद मिली। उन्होंने मार्क ट्वेन के ये शब्द डायरी में उतारे हैं : *" हम इस बात को भयानक मानते हैं कि लोगों की गर्दनें उड़ायी जायें, लेकिन हमें यह देखना नहीं सिखाया गया है कि जिन्दगी भर लम्बी वह मौत कितनी भयानक है जो गरीबी और तानाशाही पूरी आबादी पर लादती है।"*

समाजवादी समाज का निर्माण कैसे होगा ? इस प्रश्न पर विचार करते हुए भगत सिंह ने **कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र** से यह उद्धरण नोट किया है : *"सर्वहारा वर्ग अपना राजनीतिक प्रभुत्व पूंजीपति वर्ग से धीरे-धीरे कर सारी पूंजी छीनने के लिए, उत्पादन के सारे औजारों को राज्य, अर्थात शासक वर्ग, के हाथों में केन्द्रीकृत करने के लिए तथा समग्र उत्पादक शक्तियों में यथाशीघ्र वृद्धि के लिए इस्तेमाल करेगा।"*

भगत सिंह नये समाजवादी समाज की उत्पादन प्रणाली पर ही विचार नहीं कर रहे थे, बरन् उनके चिन्तन की परिधि में सामाजिक -राजनीतिक तंत्र, समाज और व्यक्ति के सम्बन्ध, व्यक्ति और व्यक्ति के सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, विवाह की संस्था का स्वरूप, शिक्षा व्यवस्था व न्याय-व्यवस्था - संक्षेप में वह नया सामाजिक परिवेश समग्रता में समाहित था जिसमें एक नये मानव का जन्म होगा।

इस नये समाज की रचना की जटिलताएं और चुनौतियां, उसके आरोह-अवरोह क्या होंगे- इस प्रश्न पर भी विचार करने और तत्सम्बन्धी नोट्स भी डायरी में विद्यमान हैं। दूसरे शब्दों में, पूंजीवादी समाज से वर्ग विहीन कम्युनिस्ट समाज की यात्रा में समाजवादी समाज का एक दीर्घकालिक ऐतिहासिक संक्रमण-काल होता है-इस बिन्दु पर भी उनकी दृष्टि मौजूद थी। हालांकि, इसकी तमाम जटिलताएं और अन्तरविरोधों पर और गहराई में विचार करने का समय उन्हें नहीं मिल सका, लेकिन उनके चिन्तन की गति जितनी तेज थी, और किसी समस्या पर विचार करने का उनका 'एप्रोच' जितना वैज्ञानिक और मौलिक था, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वे इस प्रश्न की गहराई में पैठते।

पूंजीवाद-साम्राज्यवाद विरोधी क्रान्ति के पूरे दौर में और क्रान्ति के बाद समूचे समाजवाद के दौर में एक क्रान्तिकारी पार्टी, जो मार्क्सवादी विचारधारा पर आधारित हो, को वे अनिवार्य मानते थे। इसके महत्व को आत्मसात करते हुए उन्होंने जनसमुदाय के साथ क्रान्तिकारी पार्टी के रिश्तों पर भी विचार किया क्योंकि वे इस सच्चाई को भी भली-भांति समझ चुके थे कि क्रान्ति सिर्फ कुछेक बहादुर लोगों की दुस्साहसिक कार्रवाई मात्र नहीं होती वरन् क्रान्ति जनता द्वारा सम्पन्न की जाती है और जनता के लिए होती है।

इस तरह की क्रान्तिकारी पार्टी को परिस्थितियों का सही-सटीक विश्लेषण करते हुए अपनी अचूक रणनीति और रणकौशल विकसित करने होते हैं। इस सम्बन्ध में मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के कई महत्वपूर्ण उद्धरण भगत सिंह ने नोट किये हैं।

नये समाज की रचना के लिए भगत सिंह समाज के मौजूदा हालात के खिलाफ विद्रोह को न केवल न्यायसंगत मानते थे वरन् इसे वे क्रान्ति की पहली सीढ़ी मानते थे। पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के अत्याचारों व तमाम मानवता-विरोधी अपराधों के खिलाफ बगावत के जज्बे के बिना क्रान्ति के बारे में और नया समाज बनाने के बारे में सोचा ही नहीं जा सकता। नौजवानों के नाम उनका यह सन्देश है कि हर प्रकार की जड़ता व ठहराव के खिलाफ, पुराने मूल्यों, रूढ़ियों-रीति-रिवाजों के खिलाफ विद्रोह करो। क्योंकि यदि आत्मा में विद्रोह की यह सतत आवाज न गूंजती हो तो यह समझ लेना चाहिए कि वह क्षरित हो रही है।

भगत सिंह की यही विद्रोही आत्मा उन्हें पल भर भी निष्क्रिय, गतिहीन, छिछला और निरुद्देश्य जीवन जीने से रोकती थी। इसी जज्बे ने उन्हें सोचने और जीने के 'आदतन ढंग' से छुटकारा दिलाकर बेकली और उद्विग्नता के साथ, एक ऊष्मावान, ऊर्जास्विता और क्रान्तिकारी जीवन्तता से भरा-पूरा जीवन जीने का ढंग सिखाया। जीने का सलीका, सोचने का तौर-तरीका और मरने का यह निराला ढंग ही भगत सिंह की वसीयत है जो डायरी के इन पन्नों में दर्ज है।

अन्त में, सम्पादक की यह टिप्पणी कि "आज जब भारतीय क्रान्ति सामने उपस्थित सवालों-चुनौतियों से जूझ रही है, युवा क्रान्तिकारियों की नयी पीढ़ी के कन्धों पर रास्ता निकालने और उस पर बढ़ने का कार्यभार है तथा एक नये क्रान्तिकारी पुनर्जागरण और प्रबोधन का काम इतिहास के एजेण्डे पर है", के मद्देनजर भगत सिंह की इस वसीयत को सहेजना और लोगों तक पहुंचना भी इसी कार्यभार का एक बेहद-बेहद जरूरी अंग है।

❑

भगत सिंह की जेल नोट बुक से एक अंश

सत्ता...[1]

एक समाजवादी नेता ने धनिकतंत्र की एक मीटिंग को सम्बोधित किया और उन पर समाज के कुप्रबन्ध का दोष लगाया और इस प्रकार पीड़ित मानवता के सम्मुख उपस्थित सभी विकरालताओं और दुख–तकलीफों की सारी की सारी जिम्मेदारी उन्हीं पर थोप दी। बाद में एक पूंजीपति (मि. विक्सन) उठ खड़ा हुआ और उसे इस प्रकार सम्बोधित किया।[2]

"इस पर हमारा जवाब यह है। हमारे पास तुम्हारे ऊपर बर्बाद करने के लिए शब्द नहीं हैं। जब तुम अपने गर्वीले मजबूत हाथ हमारे महलों और वैभव की ओर बढ़ाओगे, तब हम तुम्हें दिखा देंगे कि हमारी क्या ताकत है। बमगोलों की गड़गड़ाहट और मशीनगनों की तड़तड़ाहट से हम अपना जवाब देंगे। हम तुम क्रान्तिवादियों को अपनी एड़ियों तले पीस डालेंगे, और तुम्हारे चेहरों को कुचल डालेंगे। यह दुनिया हमारी है। हम इसके मालिक हैं और यह हमारी ही रहेगी। जहां तक श्रम की बात है, यह तो जब से इतिहास शुरू हुआ तभी से धूल चाटता रहा है, और मैंने इतिहास को ठीक से पढ़ा है और यह तब तक धूल चाटता रहेगा जब तक हमारे और हमारे उत्तराधिकारियों के हाथ में सत्ता रहेगी।

"एक शब्द है–सत्ता। यह सभी शब्दों का राजा है। ईश्वर नहीं, धन–वैभव नहीं, बल्कि सत्ता। अपनी जबान पर रख लो और तब तक रखे रहो जब तक कि यह उसे झनझनाने न लगे।"

"मुझे उत्तर मिल गया", अर्नेस्ट (उस समाजवादी नेता)[3] ने निर्विकार भाव से कहा। "एकमात्र यही उत्तर दिया भी जा सकता था। सत्ता। हम मजदूर वर्ग के लोग इसी का तो प्रचार करते हैं। हम जानते हैं और अपने कटु अनुभव से भलीभांति जानते हैं, कि सत्य की, न्याय की, मानवता की, कोई भी अपील कभी तुम्हें छू नहीं सकती। तुम्हारे दिल भी तुम्हारी उन एड़ियों की तरह ही कठोर हैं जिनसे तुम गरीबों के चेहरे कुचलते हो। इसीलिए तो हमने सत्ता का प्रचार किया है। लेकिन, चुनाव के दिन हमारे मतपत्रों की ताकत तुमसे तुम्हारी सरकार छीन ले जायेगी...।"

"अगर चुनाव के दिन तुम्हें बहुमत, भारी बहुमत मिल ही जाये, तो भी उससे क्या फर्क पड़ने वाला है", मि. विक्सन तपाक से बोला।

"मान लो यदि मतपेटिकाओं में तुम्हारी जीत के बावजूद हम तुम्हें सत्ता सौंपने से इंकार कर दें तो ?"

"हमने उस पर भी सोच रखा है", अर्नेस्ट ने जवाब दिया। "और इसका जवाब हम तुम्हें गोलियों से देंगे। सत्ता, तुम्हीं ने इसे शब्दों का राजा कहा है। बहुत अच्छा ! सत्ता, देखेंगे इसे। और जिस दिन हम चुनाव में विजय हासिल कर लेंगे और तुम हमारी इस संवैधानिक और शान्तिपूर्ण ढंग से हासिल की गयी सत्ता को हमें सौंपने से इंकार कर दोगे, तो तुम्हारे इस सवाल के जवाब में कि हम क्या करेंगे – उस दिन, मैं बता दूं, कि हम तुम्हें इसका जवाब देंगे, हम बमगोलों की गड़गड़ाहट और मशीनगनों की तडतड़ाहट से अपना जवाब देंगे।

"तुम हमसे बच नहीं सकते। यह सही है कि तुमने इतिहास को ठीक से पढ़ा है। यह सही है कि श्रम इतिहास के आरम्भ से ही धूल चाटता आ रहा है। और यह भी सही है कि जब तक तुम्हारे और तुम्हारे उत्तराधिकारियों के हाथ में सत्ता रहेगी, तब तक श्रम धूल ही चाटता रहेगा। मैं तुमसे सहमत हूं। तुमने जो कुछ कहा है उन सारी बातों से मैं सहमत हूं। सत्ता ही निर्णायक होगी, जैसा कि हमेशा होता आया है, यही तो वर्गों का संघर्ष है। जैसे तुम्हारे वर्ग ने पुराने सामन्ती तंत्र को ध्वस्त किया, ठीक वैसे ही मेरा वर्ग, मजदूर वर्ग, तुम्हारे वर्ग को ध्वस्त कर डालेगा। अगर तुम अपने प्राणिविज्ञान और अपने समाज विज्ञान को भी उतनी ही स्पष्टता से पढ़ो, जितनी स्पष्टता से तुम इतिहास पढ़ते हो, तो तुम देखोगे कि मैंने जिस हश्र का वर्णन किया है वह अपरिहार्य है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इसमें एक वर्ष लगेगा, दस वर्ष लगेंगे या हजार वर्ष लगेंगे – यह तय है कि तुम्हारा वर्ग मिट्टी में मिल जायेगा और यह सत्ता के जरिये ही होगा। हम मेहनतकश इस शब्द को इतना रट चुके हैं कि हमारे दिमाग इससे झनझना रहे हैं। सत्ता। यह एक राजोचित शब्द है।"

1. शीर्षक का शेष हिस्सा फटा हुआ है। 2. भगत सिंह के शब्द। 3. कोष्ठक में भगत सिंह के शब्द

– जैक लण्डन कृत आयरन हील से उद्धृत